स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

पीएच. डी. उपाधि हेतू प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध की रूपरेखा

रूपरेखा

"नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन"

¿ÖÖ–Ö”ü¡Ö

मन्नाडे रमा धनराज

(‹´Ö.‹., ‹´Ö. ×±ú»Ö.)

शोध निर्देशक

डॉ. मा. ना. गायकवाड

कै. व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय,

बाभळगाव ता. जि. लातूर

´ÖÖ“Ö -ú 2016

"रुपरेखा"

विषय : 'नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन'

अनुक्रमणिका

भूमिका

†¬µÖÖµÖ ¯ÖÆ»Ö´Ö : नरेन्द्र कोहली का व्यक्तित्व एवंम् कृतित्व

†¬µÖÖµÖ ×««ÖŸÖßµÖ : नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों का संक्षिप्त अनुशिलन

†¬µÖÖµÖ ŸÖ×ŸÖßµÖ : नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन

†¬µÖÖµÖ “ÖŸÖã£Ö : नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों में स्त्री -पुरुष पात्रों का चरित्र चित्रन

†¬µÖÖµÖ ¯ÖÓ“Ö´Ö : समकालीन पौराणिक उपन्यासकारों में नरेन्द्र कोहली का स्थान

†¬µÖÖµÖ ÂÖÂšÖ´Ö : नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन

†¬µÖÖµÖ ÃÖ¯ŸÖ´Ö : ˆ¯ÖÃÖÓÆÖ¸ü

¯Ö×¸ü×¿ÖÂ™ü † - मुल ग्रंथसूची

ÃÖÆü³Ö ÃÖ“Öß

भूमिका

नरेन्द्र कोहली एक दायित्वान रचनाकार है। मानव जीवन में पाऐ जानेवाले अंतरविरोध और विसंगतियों का उन्होंने अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। साहित्यकार अपनी समय की अभावात्मक स्थितियों से आंदोलित होकर बेहतर समाज रचना के उद्देश्य से साहित्य सृजन में प्रवृत्त होता है।

कोहली जी बहुमुखी प्रतिभासंपन्न रचनाकार है उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में रचना की है। उपन्यास, कहानी, नाटक, जीवनी, संस्मरण, व्यंग्य, आलोचना, बालसाहित्य आदि विधाओं में लेखन किया है।

नरेन्द्र कोहली सामाजिक चेतना से संपन्न ध्येय धरणी रचनाकार है। वे एक कलासाधक की अपेक्षा जीवन के व्याख्याता अधिक है।

साहित्यकार समाज का संवेदनशील सदस्य होने के कारण सामाजिक जीवन की यथार्थ स्थितियाँ उसे सामान्य व्यक्ति की तुलना में अधिक तीव्रता से प्रभावित करती है। साहित्यकार संवेदनशील, कल्पनाशील और दुरदर्शी, भविष्यदर्शी होने के कारण उनकी रचनाएँ मानव जाँति के लिए एक निश्चित दिशा देने का प्रयास करती है।

नरेन्द्र कोहली की मानसिकता प्रारंभ से ही समाजधर्मी और यथार्थ परख रही है।

मैं जब ग्रंथालय मे जाकर नरेन्द्र कोहली के कुछ प्रमुख उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद मुझ ो ऐसा लगा कि मैं नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों पर लिखने का प्रयास करूँ इसलिए मैंने तया किया कि नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन इस विषय पर शोधप्रबंध सादर करूँ।

इसके साथ - साथ मेरे आदरणीय मार्गदर्शक डॉ. मा. ना. गायकवाड इनके अनुरोध पर तथा उनके मार्गदर्शन पर मैंने इस विषय को लेकर शोध - प्रबंध सादर करणे का निश्चय किया है।

: †¬µÖÖµÖ ¯ÖÏ£Ö´Ö :

नरेन्द्र कोहली का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

नरेन्द्र कोहली का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इस अध्याय में साहित्यकार नरेन्द्र कोहली के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसमें उनका जन्म, जन्मस्थान, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा-दिक्षा, जीविको पार्जन, विवाह, रहन सहन साहित्य सृजन आदि का विवेचन किया है। तत्पश्चात नरेंन्द्र कोहली के कृतित्व के विवेचन में उनके औपन्यासेत्तर साहित्य का परिचय देकर उपन्यासो की सूची प्रस्तुत की गयी है।

1.0 ¾µÖÛŒÖŸÖÖ¾Ö

१.१.१ जन्म

1.1.2 ´ÖÖŸÖÖ-×¯ÖŸÖÖ

१.१.३ भाई-बहन

१.१.४ शिक्षा

1.1.5 ×¾Ö¾ÖÖÆü

१.१.६ जीवन संघर्ष

१.१.७ कोहली जी का कार्यक्षेत्र

1.1.8 ºþ×“Ö

1.1.9 Ã¾Ö³ÖÖ¾Ö

1.2 कृतित्व

1.2.1 ÃÖÖ×ÆüŸµÖÖ¸ü³Ö

1.2.2 लेखनप्रक्रिया

1.2.3 साहित्य सृजन का उद्देश्य

1.2.4 उपन्यास

1.2.5 कहानी

1.2.6 व्यंग्य रचनाएँ

1.2.7 नाटक

1.2.8 कोहली जी की अन्य रचनाएँ

1.2.9 पुरस्कार

: †¬µÖÖµÖ ×«üÛÖßµÖ :

नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों का संक्षीप्त अनुशीलन

पौराणिक उपन्यासों का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, निम्ननुसार उपन्यास अंकित किया जायेगा।

2.1 दीक्षा

2.2 संघर्ष की ओर

2.3 युद्ध (दो भाग)

2.4 अभिज्ञान

2.5 तोडो कारा तोडो (निर्माण) भाग - १

2.6 तोडो कारा तोडो (साधना) भाग - २

2.7 तोडो कारा तोडो (परिव्राजक) भाग - ३

2.8 तोडो कारा तोडो (निर्देश) भाग - ४

2.9 तोडो कारा तोडो (संदेश) भाग - ५

2.10 महासमर - (बंधन) १

2.11 महासमर - (अधिकार) २

2.12 महासमर - (कर्म) ३

2.13 ´ÖÆüÖÃÖ´Ö¸ü - (¬Ö´ÖÔ) 4

2.14 ´ÖÆüÖÃÖ´Ö¸ü - (†ÝÖ¸üÖ»Ö) 5

2.15 ´ÖÆüÖÃÖ´Ö¸ü - (¯Ö“”û®Ö) 6

2.16 महासमर - (प्रत्यक्ष) ७

2.17 महासमर - (निबंध) ८

इस अध्याय में उपरोक्त सभी पौराणिक उपन्यासों का संक्षीप्त अनुशीलन किया जायेगा।

: †¬µÖÖµÖ ŸÖßÖßµÖ :

नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन

३.१ महासमर - बन्धन

बन्धन इस उपन्यास में शांतनु, सत्यवती तथा जीवन मूल्यों की कथा हैं। घटनाओं की दृष्टि से यह सत्यवती के हस्तीनापुर में आने तथा हस्तीनापुर से चले जाने के मध्य की कथा हैं। जिसमें जीवन के उच्च अध्यात्मिक मूल्य जीवन की निम्नता और भौतिकता के सम्मुख असमर्थ प्रतित होते हैं।

३.२ महासमर - अधिकार

प्रस्तुत उपन्यास में अधिकार की व्याख्या तथा अधिकारों के हस्तीनापुर में निरंतर होनेवाले षडयंन्त्र की प्राप्ती करने की तैयारी तथा संघर्ष भरी कथा हैं।

३.३ महासमर - कर्म

इस उपन्यास की कथा युधिष्ठिर के युवराज अभिषेक के पश्चात की कथा हैं। इस युवराज के पिछे मथुरा की यादव शक्ति हैं। इसी युवराज की कथा इस उपन्यास में हैं।

3.4 ´ÖÆüÖÃÖ´Ö¸ü - ¬Ö´Ö

इस उपन्यास में पांडवों के राज्य के रुप में खांडवप्रस्थ मिला हुआ हैं। जहाँ न कृषी हैं न व्यापार तथा युद्धिष्टिर के सामने धर्मसंकट हैं और उधर अर्जुन के सामने भी धर्मसंकट खडा हुआ हैं।

३.५ महासमर - अन्तराल

इस अन्तराल उपन्यास में द्यूत में पांडव हार जाते हैं। और पांडवो का वनवास क्या हैं इस अन्तराल में बताया हुआ हैं।

3.6 ´ÖÆüÖÃÖ´Ö¸ü - ¯Ö“”®Ö

इस उपन्यास में दुर्योधन का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया हैं। दुर्योधन के सुख में वह प्रच्छन्न बैठा हुआ हैं। दुःख और युधिष्ठिर की अव्यावहारिकता में प्रच्छन्न रुप से बैठा हुआ हैं।

3.7 महासमर - प्रत्यक्ष

इस उपन्यास में प्रत्यक्ष का समीक्षात्मक अध्ययन किया हुआ हैं।

3.8 महासमर - निर्बंध

इस उपन्यास की कथा द्रोण पर्व से आरंभ होकर शांती पर्व तक चलती हैं। इसका अधिकांश भाग तो युद्धक्षेत्र में हुआ हैं।

३.९ तोडो कारा तोडो - निर्माण

इस उपन्यास में स्वामीजी के व्यक्तित्व निर्माण की विभिन्न आयामों तथा चरण में कथा बताई हुई हैं। इसका कथानक जन्म से लेकर श्री रामकृष्ण परमहंस के सम्मुख आत्मसमर्पन तक की घटनाओं पर †Ö¬ÖÖx¸üŸÖ Æîü…

३.१० तोडो कारा तोडो - साधना

इस दुसरे खंड में साधना अपने गुरु के चरणों में बैठ कर की गई साधना और गुरु के ध्येह त्याग के पश्चात उनके आदेशानुसार अपने गुरु भाईयों को एक मठ में संगठीत करने की कथा कही हैं।

३.११ तोडा कारा तोडो - परिव्राजक

इस तिसरे खंड में उनके एक अज्ञात सन्यासों के रुप में कलकत्ता से द्वारका तक के भ्रमण की कथा बताई हुई हैं।

३.१२ तोडो कारा तोडो - निर्देश

इस चौथे खंड में द्वारका में सागर तट में बैठकर स्वामी विवेकानंद ने भारत की दुर्दशा को देखकर आँसू बहाये हैं। इससे उन्हे एक अलौकिक निर्देश मिल रहे हैं।

३.१३ तोडो कारा तोडो - संदेश

इस पाँचवे खंड में उन्होंने अपने गुरु के सरंक्षण और अपने संकल्प से उन सब कठिनाईयों का

सामना किया और संसार को भारत माता का संदेश देने में जुट गए।

3.14 दीक्षा

3.15 संघर्ष की ओर

3.16 युद्ध (दो भाग)

3.17 अभिज्ञान

उपरोक्त पौराणिक उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन इस अध्याय में किया जायगा।

: †¬µÖÖµÖ “ÖÝÖ£Ö:

नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों में स्त्री - पुरुष पात्रों का चरित्र चित्रण

इस अध्याय में नरेन्द्र कोहली के उपन्यासो के स्त्री - पुरुष पात्रों का चरित्र चित्रण का विवेचन किया गया है। निम्मलिखित उपन्यासों का कुछ महत्त्वपूर्ण पात्रों का चरित्र चित्रण किया जायेगा।

नरेन्द्र कोहली ने अपने साहित्य में १७ पौराणिक उपन्यासों का योगदान दिया हुआ हैं। उन्होंने अपने साहित्य में निम्नलिखित १७ पौराणिक उपन्यास लिखे हुए हैं।

वह इस प्रकार हैं। अभ्युद्य (दीक्षा अवसर, संघर्ष की ओर), अभ्युद्य (युद्ध -१, युद्ध -२), महासमर -१ (बंधन), महासमर - २ (अधिकार), महासमर - ३ (कर्म), महासमर - ४ (धर्म) , महासमर - ५ (अन्तराल), महासमर - ६ (प्रच्छन्न), महासमर - ७ (प्रत्यक्ष), महासमर - ८ (निर्बंध), तोडो कारा तोडो - १ (निर्माण), तोडो कारा तोडो - (साधना), तोडो कारा तोडो - ३ (परिव्राजक), तोडो कारा तोडो - ४ (निर्देश), तोडो कारा तोडो -५ (संदेश), अभिज्ञान आदि पौराणिक उपन्यास उन्होंने लिखे हुए हैं।

उपरोक्त इन सभी उपन्यासों में से कुछ महत्त्वपूर्ण उपन्यासों के स्त्री - पुरुष पात्रों का चरित्र - चित्रण किया जायेगा।

: †¬µÖÖµÖ ¯Ö“Ö´Ö :

समकालीन पौराणिक उपन्यासकारों में नरेन्द्र कोहली का स्थान

इस अध्याय में समकालीन पौराणिक उपन्यासकारों में नरेन्द्र कोहली के स्थान को दर्शाया गया है। नरेन्द्र कोहली अपने युग के सबसे अलग और सबसे विशिष्ट लेखक है। समकालीन कथा साहित्य में

नरेन्द्र कोहली का स्थान निश्चित करने के बाद पौराणिक उपन्यासकारों का संक्षिप्त परिचय तथा उनकी समीक्षा भी प्रस्तुत की जाएगी।

: †¬µÖÖµÖ ÂÖÂšü´Ö :

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन

6.1 ×¿Ö»¯Ö †£Ö <¾Ö Ã¾Öºþ¯Ö

6.1.1 शिल्प के आधारभूत तत्त्व

6.1.2 ³ÖÖÂÖÖ

6.1.3 ´ÖÆüÖ¾Ö¸üÖ¤üÖ¸ü ³ÖÖÂÖÖ

6.1.4 संस्कृत मिश्रित भाषा

6.1.5 अंग्रेजी मिश्रित भाषा

6.1.6 आंचलिक भाषा

6.2 ¿Öî»Öß

6.2.1 आत्मकथनात्मक शैली

6.2.2 विवरणात्मक शैली

6.2.3 ÃÖÓ´ÖÖ•Ö ¿Öî»Öß

6.2.4 ¾µÖÖÖÃÖ ¿Öî»Öß

6.2.5 व्यंग्य शैली

6.2.6 संवाद योजना

6.2.7 प्रतिक विधान

6.2.8 ØÖ²Ö´²Ö

उपरोक्त इन सभी मुदों के अनुसार शिल्पगत अध्ययन किया जायेगा।

: †¬µÖÖµÖ ÃÖ¯ÖŸÖ´Ö :

^¯ÖÃÖÓÆÖ¸ü

इस अध्याय में नरेन्द्र कोहली का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, नरेन्द्र कोहली के पौराणीक तथा उपन्यासों का संक्षीप्त अनुशीलन, नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में स्त्री - पुरुष पात्रों का चरित्र -चित्रण, नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन तथा समकालीन उपन्यास कारों मे नरेन्द्र कोहली का स्थान, शिल्पगत अध्ययन इन सभी अध्यायों का सार संक्षेप में दिया जायेगा।

¯Ö×¸ü×¿ÖÂ™ü - †

मूल ग्रंथसूची

ÃÖ¤ü³Ö ÃÖ“Öß

- ¿ÖÖ¬Ö”ûÖ¡ÖÖ -

मन्नाडे रमा धनराज

(‹´Ö.‹., ‹´Ö. ×±ü»Ö.)

- शोध निर्देशक -

डॉ. मा. ना. गायकवाड

कै. व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय,

बाभळगाव ता. जि. लातूर